

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 20-09-2024

विषय सूची

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज के 100 वर्ष

भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र

श्वेत क्रांति 2.0

संशोधित PM-JI-VAN योजना

संक्षिप्त समाचार

सूखे से अमेजन नदी का जलस्तर रिकॉर्ड निचले स्तर पर

न्यायालय की अवमानना

अमेरिकी फंड की ब्याज दर कटौती का भारतीय बाजार पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) को मंजूरी दी

ट्रेडमार्क खोज प्रौद्योगिकी

परिक्रमण

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज के 100 वर्ष

सन्दर्भ

- 20 सितम्बर, 2024 को सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की घोषणा की शताब्दी मनाई जाएगी।

हड़प्पा सभ्यता

- माना जाता है कि हड़प्पा सभ्यता मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है।
- इसका विकास सिंधु नदी के किनारे हुआ था और इसी कारण से इसे सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता को कांस्य युग की सभ्यता के रूप में पहचाना जाता है क्योंकि यहाँ विभिन्न ऐसी वस्तुएँ पाई गई हैं जो तांबे आधारित मिश्र धातुओं से बनी हैं।
- दया राम साहनी ने सबसे पहले 1921-22 में हड़प्पा की खुदाई की और राखल दास बनर्जी ने 1922 में मोहनजोदड़ो की खुदाई शुरू की।

विशाल सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है;
 - प्रारंभिक चरण (3200 ईसा पूर्व से 2600 ईसा पूर्व),
 - परिपक्व काल (2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व) और
 - बाद का चरण (1900 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व), जब इसका क्षय हुआ और यह समाप्त हो गई।
- आज यह भारत, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर में फैले 2,000 स्थलों तक फैला हुआ है।
 - गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश सहित उत्तर-पश्चिमी भारत में लगभग 1,500 स्थल हैं।
 - पाकिस्तान में लगभग 500 स्थल हैं और कुछ अफ़गानिस्तान में हैं।
- मोहनजो-दारो, हड़प्पा, गंवरीवाला (अब सभी पाकिस्तान में), राखीगढ़ी और धोलावीरा (दोनों भारत में) पाँच सबसे बड़े हड़प्पा स्थल हैं।

खोज का महत्व

- अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि इस क्षेत्र में पहली बार निवास छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास शुरू हुई, जिससे दक्षिण एशियाई इतिहास में एक अंतराल उत्पन्न हो गया।
 - हड़प्पा सभ्यता की खोज ने तथाकथित अंतराल को भर दिया।
- इस खोज ने मिस्र और मेसोपोटामिया के अतिरिक्त एशिया में एक और प्राचीन सभ्यता को जोड़ा तथा 3000 ईसा पूर्व से पश्चिम एशिया के साथ हड़प्पा सभ्यता के समुद्री संपर्कों को उजागर किया।

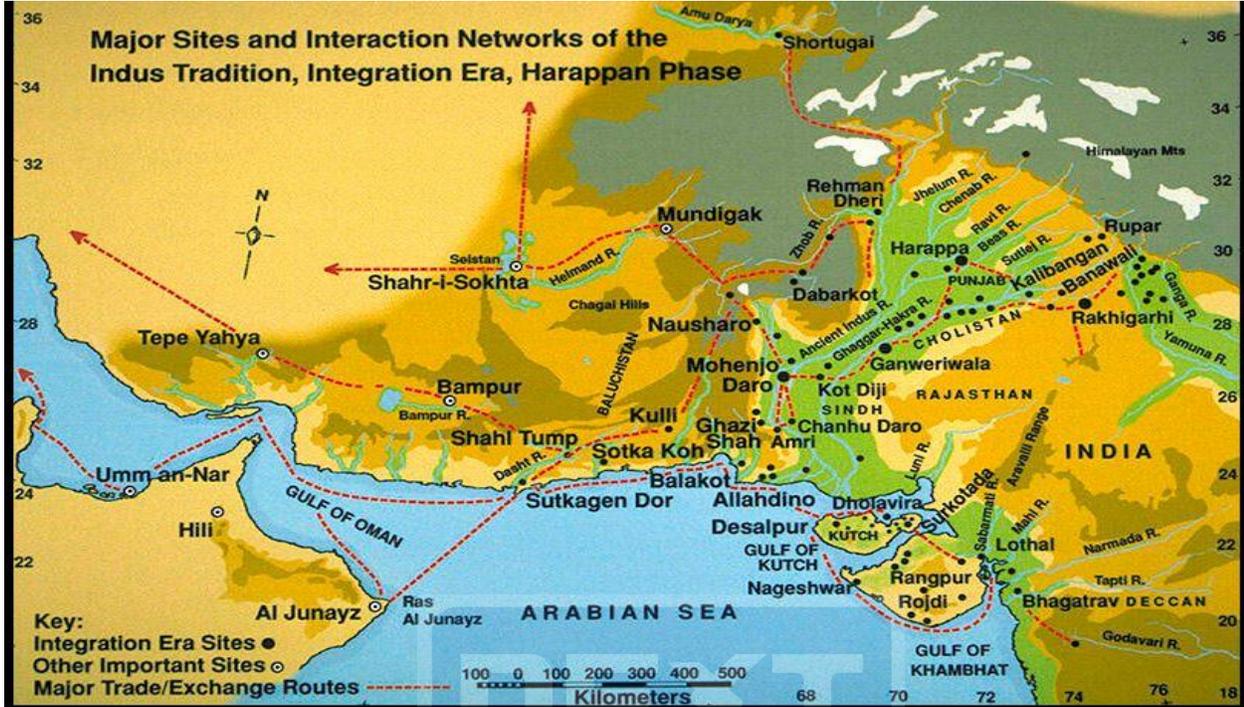
सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

- **शहरी नियोजन:** उनके शहर अच्छी तरह से नियोजित थे और उनके पास ईंट के घर थे जो सड़कों के किनारे स्थित थे।
 - प्रत्येक घर में एक सीढ़ी, एक रसोई और विभिन्न कमरे थे।
 - उनके आंगनों में कुएँ, स्नानघर थे और उनके पास उचित जल निकासी व्यवस्था थी।

- **आभूषण:** हड़प्पा के लोग सोने, चाँदी, हाथी दाँत, शंख, मिट्टी, अर्ध-कीमती पत्थरों और अन्य चीजों से बने आभूषण पहनते थे।
- **व्यापार और वाणिज्य:** सभ्यता के पास व्यापक व्यापार नेटवर्क थे, जो मेसोपोटामिया, अफ़गानिस्तान और अरब प्रायद्वीप तक फैले हुए थे।
- **धर्म और प्रतीक-विद्या:** हड़प्पा की कलाकृतियाँ विभिन्न प्रतीकों और रूपांकनों को दर्शाती हैं जिन्हें धार्मिक विश्वासों से संबंधित माना जाता है।
 - इनमें "पुजारी राजा" जैसी आकृतियाँ और बैल जैसे जानवरों की छवियाँ शामिल हैं, जो कुछ जानवरों के प्रति संभावित श्रद्धा का सुझाव देती हैं।
- **शिल्प कौशल और कलात्मकता:** हड़प्पा के लोगों ने जटिल मिट्टी के बर्तनों का निर्माण किया, जिसमें काले रंग की आकृति वाले प्रसिद्ध लाल मिट्टी के बर्तन शामिल हैं।
 - उन्होंने स्टीटाइट, टेराकोटा और अन्य सामग्रियों से बने आभूषण, मूर्तियाँ और मुहरें भी बनाईं।
- **कृषि:** वे गेहूँ, जौ, मटर और कपास जैसी फसलें उगाते थे।
- **सामाजिक संगठन:** समाज संभवतः स्तरीकृत था, साक्ष्यों से पता चलता है कि समाज में पदानुक्रमिक संरचना थी। यह आवास के आकार में भिन्नता और सार्वजनिक भवनों की उपस्थिति से संकेत मिलता है।
- **पतन और विलुप्ति:** हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों पर अभी भी इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के बीच बहस होती है।
 - संभावित कारणों में पारिस्थितिकी परिवर्तन, जैसे नदी के मार्ग में परिवर्तन, तथा आक्रमण और आंतरिक संघर्ष शामिल हैं।

प्रमुख हड़प्पा स्थल

स्थल	वर्तमान में
● हड़प्पा	● पंजाब, पाकिस्तान
● मोहनजोदड़ो	● सिंध, पाकिस्तान
● धौलावीरा	● गुजरात का कच्छ जिला,
● कालीबंगा	● राजस्थान
● लोथल	● गुजरात
● राखीगढ़ी	● हरियाणा
● चन्हुदड़ो	● सिंध, पाकिस्तान
● गंवैरीवाला	● पंजाब, पाकिस्तान
● सुत्कागेंडोर	● बलूचिस्तान प्रांत, पाकिस्तान
● आलमगीरपुर	● उत्तर प्रदेश



निष्कर्ष

- पिछले 100 वर्षों से हड़प्पा सभ्यता ने नगर योजनाकारों, अभिलेखशास्त्रियों, धातु विज्ञानियों, खगोलशास्त्रियों और अन्य लोगों को मंत्रमुग्ध और चकित किया है। इसकी पहलियों ने उन्हें चकित कर दिया है।
- अपनी समृद्धि के चरम पर, यह एक "तकनीकी महाशक्ति" थी जो नगर नियोजन, जल संचयन, जलाशयों, गोदामों, भूमिगत मलजल प्रणालियों, विशाल किलेबंदी दीवारों और समुद्री नावों के निर्माण आदि में उत्कृष्ट थी।

Source: [TH](#)

भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र

सन्दर्भ

- विश्व खाद्य भारत 2024 के तीसरे संस्करण में, प्रधान मंत्री ने कहा कि भारत ने पिछले 10 वर्षों में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को परिवर्तन के लिए "व्यापक" सुधार प्रस्तुत किए हैं।

विश्व खाद्य भारत

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने 2017 में विश्व खाद्य भारत का पहला संस्करण लॉन्च किया।
- इसमें जिन प्रमुख क्षेत्रों को प्रदर्शित किया जा रहा है, उनमें ताजे फल और सब्जियां, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ तथा मूल्य वर्धित उत्पाद, बासमती चावल, पशु उत्पाद, काजू, भौगोलिक संकेत (GI) उत्पाद, जैविक उत्पाद एवं मादक पेय शामिल हैं।
- कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) ने लगभग 80 से अधिक देशों के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को आमंत्रित किया है। यह भारतीय निर्यातकों को खरीदारों, आयातकों तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रतिनिधियों के साथ सीधे बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान कर रहा है।

खाद्य प्रसंस्करण क्या है?

- खाद्य प्रसंस्करण को कृषि उत्पादों जैसे अनाज, मांस, सब्जियां, फल और दूध को खाद्य सामग्री या प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों में परिवर्तित करने के लिए उपकरण, ऊर्जा तथा औजारों से जुड़ी विधियों एवं तकनीकों के उपयोग के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- इसमें विभिन्न तरह की गतिविधियाँ सम्मिलित हो सकती हैं, जैसे: तैयारी, खाना पकाना, संरक्षण, पैकेजिंग और फोर्टिफिकेशन।
- सुरक्षित भोजन देने के लिए फॉर्मूलेशन और प्रसंस्करण तकनीक वैज्ञानिक रूप से विकसित की जाती हैं, जिससे किसी भी हानिकारक रासायनिक संदूषक तथा सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति समाप्त हो जाती है जो खाद्य जनित बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

- भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का बाजार आकार 2022 में 866 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2027 में 1,274 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।
- शहरीकरण और परिवर्तित उपभोग पैटर्न के कारण खाद्य पदार्थों की बढ़ती खपत 2025-26 तक 1.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की संभावना है।
- भारतीय खाद्य और पेय पैकेज्ड उद्योग में पर्याप्त वृद्धि हो रही है, जिसका बाजार आकार 2023 में 33.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2028 तक 46.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।
- **क्षेत्र के विकास के कारण:** भारत दूध तथा मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक है और फलों और सब्जियों, मुर्गी पालन एवं मांस के प्रमुख उत्पादकों में से एक है।
 - भारत के पास विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच है जो इसे खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करते हैं।
 - अपनी विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों के कारण, इसके पास खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए उपयुक्त व्यापक और बड़ा कच्चा माल आधार है।

चुनौतियां

- **कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स:** पर्याप्त कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं की कमी से खाद्य पदार्थों की काफी बर्बादी होती है, विशेषकर जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं के लिए।
- **परिवहन:** खराब सड़क और परिवहन बुनियादी ढांचे के कारण माल की आवाजाही में देरी होती है, जिससे ताज़गी और गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- **जटिल अनुपालन:** FSSAI जैसी एजेंसियों द्वारा निर्धारित विभिन्न विनियमों और मानकों को लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, विशेषकर छोटे और मध्यम उद्यमों (SME) के लिए।
- **नौकरशाही में देरी:** लाइसेंस और अनुमोदन प्राप्त करना समय लेने वाला हो सकता है, जिससे व्यावसायिक संचालन प्रभावित हो सकता है।
- **आधुनिक तकनीकों को सीमित रूप से अपनाना:** विभिन्न छोटे प्रोसेसर के पास उन्नत प्रसंस्करण तकनीकों और मशीनरी तक पहुँच की कमी है, जो दक्षता और मापनीयता को सीमित करती है।
- **मूल्य संवेदनशीलता:** उपभोक्ता प्रायः मूल्य के प्रति संवेदनशील होते हैं, जो प्रोसेसर के मार्जिन पर दबाव डालता है।
- **असंगत आपूर्ति:** मौसम की स्थिति के कारण कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव आपूर्ति श्रृंखला को बाधित करता है, जिससे कमी और मूल्य अस्थिरता होती है।

- **स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता:** स्वस्थ और जैविक विकल्पों की बढ़ती माँग के लिए प्रोसेसर को अपनी पेशकशों को अनुकूलित करने की आवश्यकता होती है, जो संसाधन-गहन हो सकता है।
- **परिवर्तित रुचियाँ:** उपभोक्ता वरीयताओं में तेज़ी से हो रहे परिवर्तनों के कारण निरंतर नवाचार और उत्पाद विकास की आवश्यकता होती है।
- **अपशिष्ट प्रबंधन:** खाद्य प्रसंस्करण कार्यों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए कुशल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों की आवश्यकता है।

सरकारी पहल

- **निवेश आकर्षित करने की पहल:** उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951 के तहत लाइसेंसिंग के दायरे से सभी प्रसंस्कृत खाद्य वस्तुओं को छूट दी गई है।
 - क्षेत्रीय विनियमनों के अधीन खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के लिए स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति है।
 - भारत में निर्मित या उत्पादित खाद्य उत्पादों के संबंध में ई-कॉमर्स के माध्यम से व्यापार के लिए, सरकारी अनुमोदन मार्ग के तहत 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश।
 - कच्चे और प्रसंस्कृत उत्पादों के लिए कम GST; विभिन्न अध्याय शीर्षों/उप-शीर्षों के तहत 71.7% से अधिक खाद्य उत्पाद 0% और 5% के निचले कर स्लैब में आते हैं।
 - खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय 2 लाख सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों की स्थापना/उन्नयन के लिए तकनीकी, वित्तीय और व्यावसायिक सहायता प्रदान करने के लिए एक केंद्र प्रायोजित योजना- PM सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण योजना (PMFME) को भी लागू कर रहा है।
- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने वैश्विक खाद्य चैंपियन बनाने और विदेशों में भारतीय खाद्य ब्रांडों की दृश्यता में सुधार करने के लिए 2021-22 से 2026-27 की अवधि के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (PLIS) भी शुरू की है।
- **प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना (PMKSY):** 2016 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण बुनियादी ढांचा तैयार करना और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों के विकास को बढ़ावा देना है।
- **राष्ट्रीय खाद्य प्रसंस्करण नीति:** इस नीति का उद्देश्य खाद्य प्रसंस्करण क्षमता को बढ़ाना और क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित करना है।
- **बाजार पहुंच:** ई-कॉमर्स और प्रत्यक्ष बिक्री सहित विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के लिए बाजार पहुंच में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष

- भारत का खाद्य पारिस्थितिकी तंत्र खाद्य खुदरा क्षेत्र में वृद्धि को प्रोत्साहित करने वाली आर्थिक नीतियों और आकर्षक राजकोषीय प्रोत्साहनों के साथ भारी निवेश के अवसर प्रदान करता है।
- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (MoFPI) के माध्यम से, भारत सरकार भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में निवेश को बढ़ावा देने के लिए सभी आवश्यक उपाय कर रही है।

Source: IE

श्वेत क्रांति 2.0

सन्दर्भ

- केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने 'श्वेत क्रांति 2.0' के लिए मानक संचालन प्रक्रिया का शुभारंभ किया।

परिचय

- सरकार ने दो लाख नई बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों, डेयरी तथा मत्स्य सहकारी समितियों के गठन और सुदृढीकरण पर एक कार्य योजना भी शुरू की।
- श्वेत क्रांति 2.0 चार प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है - महिला किसानों को सशक्त बनाना, स्थानीय दूध उत्पादन को बढ़ाना, डेयरी बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और डेयरी निर्यात को बढ़ावा देना।
- श्वेत क्रांति 2.0 का लक्ष्य अगले पांच वर्षों में डेयरी सहकारी समितियों द्वारा दूध की खरीद में 50 प्रतिशत की वृद्धि करना है।
 - डेयरी सहकारी समितियां पांचवें वर्ष के अंत तक प्रतिदिन एक हजार लाख लीटर दूध खरीदेगी, जिससे ग्रामीण उत्पादकों की आजीविका में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- इस योजना में 100,000 नई और मौजूदा जिला सहकारी समितियों, बहुउद्देशीय जिला सहकारी समितियों और बहुउद्देशीय PACS की स्थापना और उन्हें मजबूत करना शामिल है, जिन्हें आवश्यक बुनियादी ढांचे के साथ दूध मार्गों से जोड़ा जाएगा।

श्वेत क्रांति

- भारत में श्वेत क्रांति, जिसे ऑपरेशन फ्लड के नाम से भी जाना जाता है, दूध उत्पादन को बढ़ाने और देश में दूध की कमी की समस्या को दूर करने के लिए लागू किया गया एक महत्वपूर्ण डेयरी विकास कार्यक्रम था।
- इसे 1970 में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) द्वारा डॉ. वर्गीज कुरियन के नेतृत्व में शुरू किया गया था, जिन्हें प्रायः "श्वेत क्रांति का जनक" कहा जाता है।

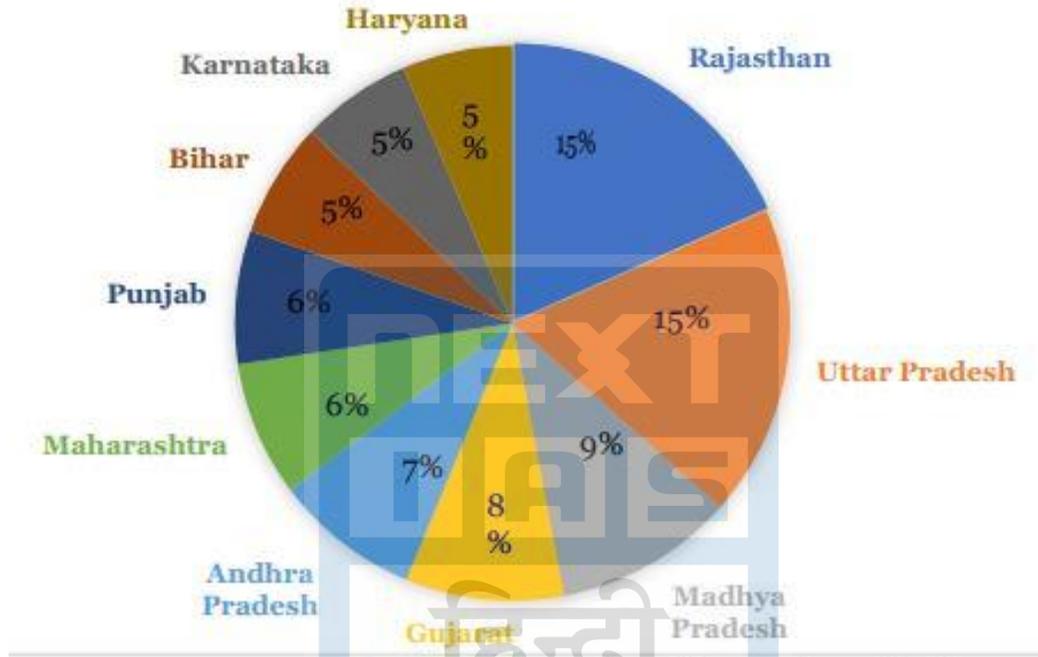
श्वेत क्रांति की प्रमुख विशेषताएं और उपलब्धियां:

- सहकारी मॉडल:** इसने डेयरी उद्योग में सहकारी मॉडल की शुरुआत की, जिससे किसानों को डेयरी सहकारी समितियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।
- अमूल:** श्वेत क्रांति का सबसे प्रमुख परिणाम गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (GCMMF) की सफलता थी, जिसने अपने उत्पादों को अमूल ब्रांड नाम से विपणन किया।
- दूध उत्पादन में वृद्धि:** इस कार्यक्रम ने पशुधन की गुणवत्ता में सुधार करके देश भर में दूध उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि की।
- बुनियादी ढांचे का विकास:** बढ़ते डेयरी उद्योग को समर्थन देने के लिए दूध प्रसंस्करण संयंत्र, कोल्ड स्टोरेज सुविधाएँ और परिवहन नेटवर्क जैसे बुनियादी ढाँचे विकसित किए गए।
- आर्थिक प्रभाव:** इसने डेयरी फार्मिंग में शामिल किसानों की आय को बढ़ावा दिया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र आर्थिक विकास में योगदान मिला।
- अन्य राज्यों में भी इसका अनुकरण:** गुजरात में ऑपरेशन फ्लड की सफलता ने अन्य राज्यों में भी इसके अनुकरण को बढ़ावा दिया, जिससे पूरे भारत में श्वेत क्रांति की पहुँच और प्रभाव का अधिक विस्तार हुआ।

भारत में डेयरी क्षेत्र

- **उत्पादन:** भारत विश्व में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो 2021-22 में वैश्विक दूध उत्पादन में 24% का योगदान देता है।
 - देश के शीर्ष 5 दूध उत्पादक राज्य हैं: राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और आंध्र प्रदेश। ये सभी मिलकर देश के कुल दूध उत्पादन में 53.11% का योगदान करते हैं।

Figure 2: Top 10 Milk Producing States



- **मूल्य-वर्धित उत्पाद:** भारत में डेयरी क्षेत्र ने तरल दूध से आगे बढ़कर मक्खन, घी, पनीर, दही और आइसक्रीम जैसे विभिन्न मूल्य-वर्धित उत्पादों का उत्पादन करने के लिए विविधता लाई है।
- **अर्थव्यवस्था:** यह उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5% का योगदान देता है और प्रत्यक्षतः 8 करोड़ से अधिक किसानों का समर्थन करता है। यह क्षेत्र विशेष रूप से महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण रोजगार प्रदाता है, और महिला सशक्तिकरण में अग्रणी भूमिका निभाता है।

भारत में डेयरी क्षेत्र की चुनौतियाँ

- **कम उत्पादकता:** पशुओं की गुणवत्ता दूध उत्पादकता और इस प्रकार समग्र उत्पादन को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण है।
 - विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक होने के बावजूद, प्रति पशु भारत की उत्पादकता वैश्विक औसत की तुलना में बहुत कम है।
- **पशु स्वास्थ्य और प्रजनन सेवाओं का प्रावधान:** रोग, उचित प्रजनन पद्धतियों की कमी और अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएँ जैसे मुद्दे पशुधन के समग्र स्वास्थ्य और गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।
- **चारा संसाधनों की कमी:** गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए विनियमनों की कमी है। सुसंगत नीति के अभाव में, बाजार में सभी प्रकार के घटिया फ़ीड उपलब्ध हैं।

- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ:** अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे जैसे कि मजबूत कोल्ड चेन की कमी के कारण दूध और डेयरी उत्पाद खराब हो जाते हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ बिजली की आपूर्ति अनियमित है।
- **प्रायोगिकी अपनाना:** किसानों में जागरूकता, शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी कृत्रिम गर्भाधान, कुशल आहार विधियों तथा रोग प्रबंधन जैसी उन्नत प्रथाओं के कार्यान्वयन में बाधा डालती है।
- **बाजार में उतार-चढ़ाव और मूल्य अस्थिरता:** दूध के लिए स्थिर और लाभकारी कीमतों की कमी डेयरी किसानों की आय को प्रभावित करती है, जिससे उनके लिए अपने संचालन की योजना बनाना और निवेश करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **गुणवत्ता मानक:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि उत्पाद घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों को पूरा करते हैं, गुणवत्ता नियंत्रण उपायों और स्वच्छता प्रथाओं के पालन में निवेश की आवश्यकता होती है।

डेयरी क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल

- **राष्ट्रीय गोकुल मिशन:** इसे स्वदेशी मवेशियों की नस्लों के संरक्षण और विकास के लिए 2014 में शुरू किया गया था।
 - **उद्देश्य:** देशी मवेशियों की उत्पादकता और आनुवंशिक सुधार को बढ़ाना।
- **राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम (NPDD):** NPDD 2014 से लागू है और इसका उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाले दूध के उत्पादन के साथ-साथ राज्य सहकारी डेयरी संघ के माध्यम से दूध तथा दूध उत्पादों की खरीद, प्रसंस्करण एवं विपणन के लिए बुनियादी ढाँचे का निर्माण या सुदृढीकरण करना है।
- **डेयरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS):** डेयरी उद्योग में स्वरोजगार के अवसर सृजित करने के लिए पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग द्वारा DEDS को लागू किया जा रहा है।
 - यह छोटे से मध्यम स्तर के डेयरी उद्यम स्थापित करने के लिए व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
 - राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक इस कार्यक्रम को चला रहा है।
- **राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP):** यह 100% मवेशियों, भैंसों, भेड़, बकरी और सूअरों की जनसंख्या का टीकाकरण करके खुरपका और मुंहपका रोग और ब्रुसेल्लोसिस के नियंत्रण के लिए 2019 में शुरू की गई एक प्रमुख योजना है।
- **राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM):** कृषि मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए NLM का उद्देश्य डेयरी फार्मिंग सहित पशुधन क्षेत्र का सतत विकास सुनिश्चित करना है।
 - इसका ध्यान पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने, उनके स्वास्थ्य में सुधार लाने तथा चारा एवं खाद्य संसाधनों के लिए सहायता उपलब्ध कराने पर केंद्रित है।

आगे की राह

- गांठदार त्वचा रोग से होने वाली मृत्यु जैसी स्थितियों पर नियंत्रण पाने के लिए टीकाकरण अभियान को तेज़ करना।
- दूध और दूध उत्पादों की मांग को बनाए रखने के लिए आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान को दूर करने के लिए मजबूत तथा प्रभावी मूल्य श्रृंखला।
- समन्वित तरीके से रणनीतियों को लागू करके, भारत में दूध उत्पादन की लागत को कम करना संभव है, साथ ही डेयरी किसानों की आजीविका में सुधार करना और एक सतत तथा संपन्न डेयरी उद्योग सुनिश्चित करना।

Source: TH

संशोधित PM-JI-VAN योजना

सन्दर्भ

- सरकार ने संशोधित प्रधानमंत्री जैव सिंचाई अनुकूल फसल अवशेष निवारण (PM-JI-VAN) योजना को मंजूरी दे दी है।

परिचय

- संशोधित योजना कार्यान्वयन समय-सीमा को पाँच वर्ष अर्थात् 2028-29 तक बढ़ा देती है। अब इसके दायरे में लिग्नोसेल्यूलोसिक फीडस्टॉक्स- जैसे कृषि और वानिकी अवशेष, औद्योगिक अपशिष्ट, संश्लेषण (सिन) गैस, शैवाल, आदि से उत्पादित उन्नत जैव ईंधन शामिल हैं।
- विभिन्न तकनीकों और फीडस्टॉक्स को बढ़ावा देने के लिए, अब इस क्षेत्र में नई तकनीकों तथा नवाचारों के साथ परियोजना प्रस्तावों को प्राथमिकता दी जाएगी।
- महत्व:** इस योजना का उद्देश्य किसानों को उनके कृषि अवशेषों के लिए लाभकारी आय प्रदान करना और पर्यावरण प्रदूषण को दूर करना है।
 - यह योजना स्थानीय रोजगार के अवसर सृजित करने में भी सहायता करती है और भारत की ऊर्जा सुरक्षा तथा आत्मनिर्भरता में योगदान देती है।
 - यह उन्नत जैव ईंधन प्रौद्योगिकियों के विकास का भी समर्थन करती है और मेक इन इंडिया मिशन को बढ़ावा देती है।
 - यह 2070 तक शुद्ध-शून्य GHG उत्सर्जन के लिए भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने में भी सहायता करती है।

प्रधानमंत्री जी-वन योजना के बारे में:

- 2019 में, सरकार ने "प्रधानमंत्री जी-वन (जैव ईंधन-वातावरण अनुकूल फसल आपदा निवारण) योजना" को अधिसूचित किया था।
- इसका उद्देश्य लिग्नोसेल्यूलोसिक बायोमास और अन्य नवीकरणीय फीडस्टॉक्स का उपयोग करके देश में दूसरी पीढ़ी (2G) इथेनॉल परियोजनाओं की स्थापना के लिए एकीकृत जैव-इथेनॉल परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

जैव ईंधन क्या हैं?

- बायोमास को सीधे तरल ईंधन में परिवर्तित किया जा सकता है, जिसे जैव ईंधन कहा जाता है।
- आज उपयोग में आने वाले दो सबसे सामान्य प्रकार के जैव ईंधन इथेनॉल और बायोडीज़ल हैं, जो दोनों ही जैव ईंधन प्रौद्योगिकी की पहली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- इथेनॉल:** इथेनॉल (CH₃CH₂OH) एक नवीकरणीय ईंधन है जिसे विभिन्न पौधों की सामग्रियों से बनाया जा सकता है, जिसे सामूहिक रूप से "बायोमास" के रूप में जाना जाता है।
- बायोडीज़ल:** यह नवीकरणीय स्रोतों से उत्पादित एक तरल ईंधन है, जैसे कि नए और उपयोग किए गए वनस्पति तेल तथा पशु वसा एवं यह पेट्रोलियम आधारित डीजल ईंधन के लिए एक स्वच्छ-जलने वाला प्रतिस्थापन है।
- यह गैर विषैला तथा बायोडिग्रेडेबल है और इसे वनस्पति तेल, पशु वसा या पुनर्नवीनीकरण खाना पकाने के तेल के साथ अल्कोहल के संयोजन से बनाया जाता है।

Source: AIR

संक्षिप्त समाचार

सूखे से अमेज़न नदी का जलस्तर रिकॉर्ड निचले स्तर पर

सन्दर्भ

- अमेज़न नदी बेसिन अभूतपूर्व सूखे का सामना कर रहा है, तथा पूरे क्षेत्र में जल स्तर ऐतिहासिक रूप से निम्नतम स्तर पर पहुँच गया है।

परिचय

- कोलंबिया की सीमा से लगे ब्राज़ील के शहर ताबटिंगा में, अमेज़न की एक प्रमुख सहायक नदी, सोलिमोस नदी, रिकॉर्ड स्तर पर अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच गई है।
- पास की झील टेफ़े, जहाँ पिछले वर्ष के सूखे में 200 से ज़्यादा मीठे पानी की डॉल्फ़िन मर गई थीं तथा सूख गई है, जिससे लुप्तप्राय गुलाबी स्तनधारियों को अपना पसंदीदा आवास खोना पड़ा है।

अमेज़न नदी

- यह पानी की मात्रा के दृष्टि से विश्व की सबसे बड़ी नदी है और अफ्रीका की नील नदी के बाद विश्व की दूसरी सबसे लंबी नदी है।
- यह महासागरों में वैश्विक नदी के निर्वहन का 20% प्रतिनिधित्व करती है।
- **स्रोत:** नदी का स्रोत पेरू के एंडीज में 5,598 मीटर की ऊँचाई पर है।
- **लंबाई:** 6400 किमी।
- **बेसिन:** बेसिन में ब्राज़ील और पेरू का बड़ा भाग, कोलंबिया, इक्वाडोर और बोलीविया के कुछ भाग और वेनेजुएला का एक छोटा सा क्षेत्र सम्मिलित है।
- **सहायक नदियाँ:** जापुरा, जुरुआ, मदीरा, नीग्रो, पुरुस और ज़िंगू नदियाँ।
- **मुहाना:** ब्राज़ील के उत्तरपूर्वी तट पर अटलांटिक महासागर।

Source: [IT](#)

न्यायालय की अवमानना

समाचार में

- झारखंड सरकार ने झारखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति में अनुचित विलंब का आरोप लगाते हुए केंद्र सरकार के विरुद्ध न्यायालय की अवमानना याचिका दायर की है।

न्यायालय की अवमानना

- यह उन कार्यों या व्यवहार को संदर्भित करता है जो न्यायालय के अधिकार, न्याय और गरिमा की अवज्ञा या अनादर करते हैं।
- यह न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 द्वारा शासित है।
- अनुच्छेद 129 और अनुच्छेद 215 उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों को अवमानना को दंडित करने की शक्ति देते हैं।
- **न्यायालय की अवमानना के प्रकार:**
 - **सिविल अवमानना:** न्यायालय के किसी निर्णय, डिक्री, निर्देश, आदेश, रिट या अन्य प्रक्रियाओं की जानबूझकर अवज्ञा या न्यायालय को दिए गए वचन का जानबूझकर उल्लंघन करना।

- **आपराधिक अवमानना:** इसमें ऐसी कार्रवाइयां सम्मिलित हैं जो न्यायालय के अधिकार को अपमानित या कम करती हैं, न्यायिक कार्यवाही को प्रभावित करती हैं या न्याय प्रशासन में हस्तक्षेप करती हैं।
 - इसमें ऐसी सामग्री का प्रकाशन शामिल है जो न्यायपालिका की गरिमा को कम करती है या न्याय में बाधा डालती है।
- **न्यायालय की अवमानना के लिए सजा:** अवमानना की गंभीरता के आधार पर सजा में जुर्माना, कारावास या दोनों शामिल हो सकते हैं।

Source: TH

अमेरिकी फेड की ब्याज दर कटौती का भारतीय बाजार पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

सन्दर्भ

- संयुक्त राज्य अमेरिका के फेडरल रिजर्व ने घोषणा की है कि वह बेंचमार्क ब्याज दर, फेडरल फंड्स रेट में 50 आधार अंक या आधा प्रतिशत की कटौती करेगा।

परिचय

- ब्याज दर में कटौती से सामान्यतः आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिलता है, विकास को बढ़ावा मिलता है और लोगों के लिए पैसे उधार लेना सस्ता होने से रोजगार सृजन बढ़ता है। इसके विपरीत, ब्याज दरों में बढ़ोतरी या लगातार उच्च ब्याज दरें आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को कम करती हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- भारत एक पूंजी-विहीन अर्थव्यवस्था है, और अमेरिका में कम ब्याज दरें वैश्विक निवेशकों को अमेरिका में उधार लेने और भारत में, शेयरों, ऋण या प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के रूप में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करेंगी।
- अमेरिका में ब्याज दरों में बार-बार कमी से भारतीय रुपये जैसी अन्य मुद्राओं के साथ अमेरिकी डॉलर की विनिमय दर में भी कुछ कमजोरी आएगी। बदले में, इसका भारत के निर्यातकों पर (प्रतिकूल) और आयातकों पर (सकारात्मक) प्रभाव पड़ेगा।

Source: IE

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) को मंजूरी दी

सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गगनयान कार्यक्रम का दायरा बढ़ाते हुए भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) की पहली इकाई के निर्माण को मंजूरी दे दी है।

परिचय

- BAS का पहला मॉड्यूल 2028 में लॉन्च किया जाएगा और 2035 तक पूरी तरह से चालू स्वदेशी अंतरिक्ष स्टेशन बनाया जाएगा।
- BAS को पृथ्वी की सतह से 400 किमी ऊपर निचली पृथ्वी की कक्षा में रखा जाएगा।

- संशोधित गगनयान कार्यक्रम में BAS के लिए विकास और पूर्ववर्ती मिशनों का दायरा शामिल है, और चल रहे गगनयान कार्यक्रम के विकास के लिए एक अतिरिक्त मानव रहित मिशन तथा अतिरिक्त हार्डवेयर आवश्यकता को शामिल किया गया है।
- अब प्रौद्योगिकी विकास और प्रदर्शन का मानव अंतरिक्ष यान कार्यक्रम आठ मिशनों के माध्यम से दिसंबर 2028 तक BAS-1 की पहली इकाई को लॉन्च करके पूरा किया जाएगा।
- 52 टन का अंतरिक्ष स्टेशन भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों एवं वैज्ञानिकों के लिए माइक्रोग्रैविटी, खगोल विज्ञान तथा पृथ्वी अवलोकन में प्रयोग करने के लिए एक शोध मंच के रूप में कार्य करेगा, और अंतरिक्ष यात्रियों को 15-20 दिनों तक कक्षा में रहने की अनुमति देगा।

क्या आप जानते हैं?

- वर्तमान में केवल दो ही अंतरिक्ष स्टेशन कार्यरत हैं – अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS), जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, जापान, यूरोप और कनाडा के सहयोग से विकसित किया गया है; और चीन का तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन (TSS)।

Source: [PIB](#)

ट्रेडमार्क खोज प्रौद्योगिकी

समाचार में

- केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) आधारित ट्रेडमार्क सर्च टेक्नोलॉजी तथा IP सारथी चैटबॉट का अनावरण किया।
 - सारथी चैटबॉट एक डिजिटल सहायक है जो IP पंजीकरण प्रक्रिया में उपयोगकर्ताओं को तत्काल सहायता प्रदान करता है।

ट्रेडमार्क खोज प्रौद्योगिकी

- सटीक ट्रेडमार्क पहचान के लिए उन्नत AI और ML एल्गोरिदम।
- घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यवसायों के लिए सुव्यवस्थित खोज प्रक्रियाएँ।
- ट्रेडमार्क के लिए बढ़ी हुई सुरक्षा क्षमताएँ।

महत्व

- यह पहल बौद्धिक संपदा (IP) सेवाओं को आगे बढ़ाने के लिए भारत की प्रतिबद्धता का समर्थन करती है और भारत को IP सिस्टम नवाचार में अग्रणी बनाती है।
- इस तकनीक का उद्देश्य बेहतर सटीकता और दक्षता के साथ ट्रेडमार्क आवेदन मंजूरी में तेजी लाना है, जिससे ट्रेडमार्क विवादों का संभावित समाधान हो सके।

Source : Pib

परिक्रमा

समाचार में

- अध्ययन से पता चलता है कि पौधों की वृद्धि के पैटर्न में परिक्रमा की भूमिका हो सकती है।
 - इस अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने पाया कि घनी पंक्ति में उगने वाले सूरजमुखी स्वाभाविक रूप से एक लगभग पूर्ण ज़िगज़ैग पैटर्न बनाते हैं, जिसमें प्रत्येक पौधा बारी-बारी से पंक्ति से दूर झुकता है।

परिक्रमा के बारे में

- यह पौधों के बढ़ते हुए शीर्षों, जैसे कि टहनियाँ, टेंड्रिल्स और जड़ों में देखी जाने वाली धीमी, दोहरावदार और प्रायः सर्पिल गति को संदर्भित करता है।
- यह गति पौधे के विभिन्न भागों में भिन्न वृद्धि दरों के कारण होती है, विशेष रूप से शीर्षस्थ मेरिस्टेम में, जो एक कुंडलाकार या गोलाकार गति की ओर ले जाती है।
- **उदाहरण:**
 - चढ़ने वाले पौधों के टेंड्रिल्स सहारे का पता लगाने और उसके चारों ओर कुंडल बनाने के लिए परिक्रमा करते हैं।
 - जड़ें मिट्टी में से होकर गुजरने के लिए परिक्रमा का उपयोग कर सकती हैं, जिससे विकास के लिए सबसे अच्छा मार्ग मिल सकता है।

Source: theconversation

अमीबिक मेनिंगोएन्सेफेलाइटिस

समाचार में

- केरल ने पर्यावरणीय कारकों का अध्ययन करने और निदान विधियों में सुधार करने के लिए वन हेल्थ प्लेटफॉर्म के माध्यम से अमीबिक मेनिंगोएन्सेफेलाइटिस पर अनुसंधान शुरू किया है।

अमीबिक मेनिंगोएन्सेफेलाइटिस के बारे में

- यह एक दुर्लभ लेकिन जानलेवा केंद्रीय तंत्रिका तंत्र संक्रमण है जो मीठे पानी, झीलों और नदियों में पाए जाने वाले मुक्त-जीवित अमीबा (FLA) के कारण होता है।
- **अमीबिक इंसेफेलाइटिस के प्रकार:**
 - इसके दो प्रकार हैं- प्राथमिक अमीबिक मेनिंगोएन्सेफेलाइटिस (PAM) जो नेगलेरिया फाउलेरी के कारण होता है, और ग्रैनुलोमैटस अमीबिक इंसेफेलाइटिस (GAE)।
 - दोनों में मृत्यु दर अधिक है, PAM मुख्य रूप से बच्चों और युवा वयस्कों को प्रभावित करता है।
 - PAM प्रायः गर्म जलवायु और गर्मियों के महीनों में होता है। गर्म, स्थिर मीठे पानी में तैरना, या नाक की सिंचाई के लिए बिना कीटाणुरहित पानी का उपयोग करना, प्रमुख जोखिम कारक हैं।
- **अमीबा विकास और जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन के कारण पानी के बढ़ते तापमान से एन. फाउलेरी के साथ मुठभेड़ों में वृद्धि होने की उम्मीद है, जो गर्म, स्थिर जल निकायों में पनपता है।
- **लक्षण और निदान की चुनौतियाँ:** PAM बैक्टीरियल मेनिंजाइटिस के समान लक्षणों के साथ प्रस्तुत होता है, जिससे प्रारंभिक निदान मुश्किल हो जाता है। निदान में देरी से प्रायः मस्तिष्क को तेजी से क्षति पहुंचती है और मृत्यु हो जाती है।
- **मिल्टेफोसिन की शुरुआत:** मिल्टेफोसिन, एक एंटी-पैरासिटिक दवा, एम्फोटेरिसिन बी के साथ उपचार प्रोटोकॉल में एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त थी, जिसने रोगियों में बेहतर परिणामों में योगदान दिया।

Source :TH

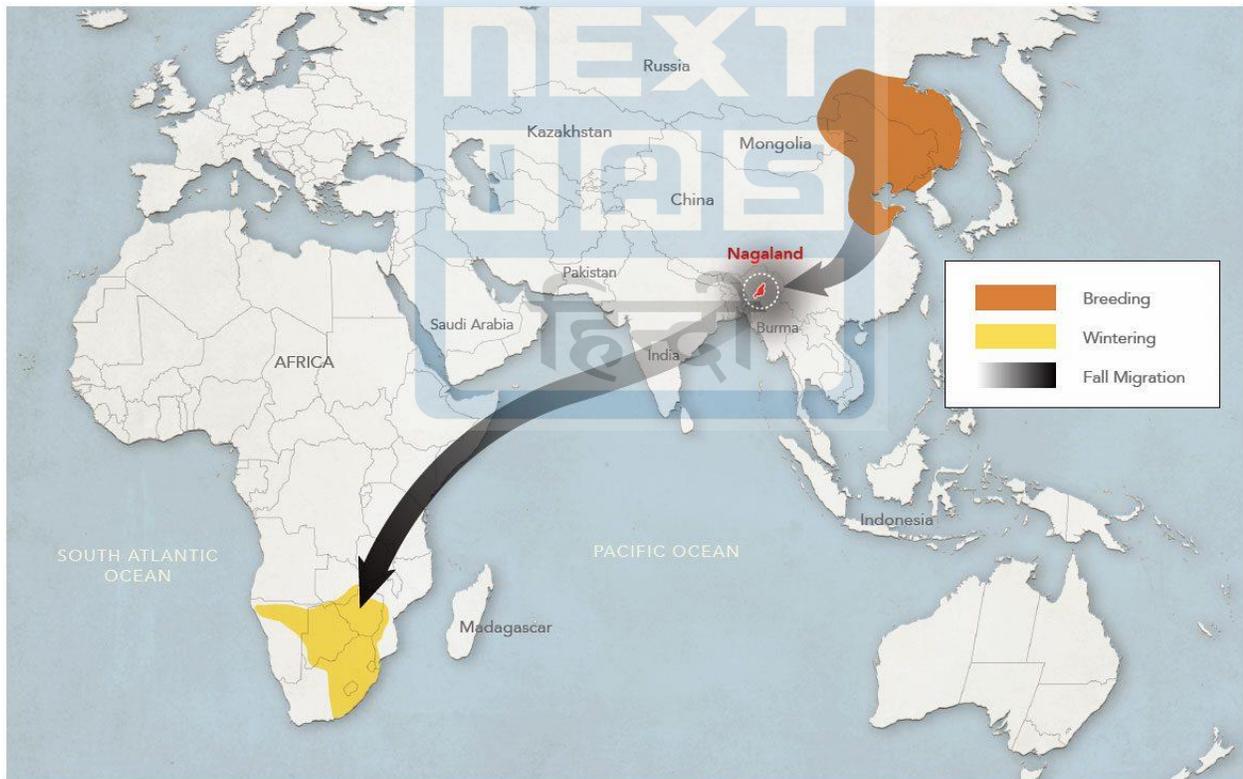
अमूर फाल्कन्स

समाचार में

- मणिपुर के तामेंगलोंग जिले में अमूर फाल्कन के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

अमूर फाल्कन्स के बारे में

- वे फाल्कन परिवार के छोटे शिकारी पक्षी हैं, जिनका वैज्ञानिक नाम फाल्को एमुरेंसिस है।
- वे विश्व के सबसे लंबे समय तक यात्रा करने वाले शिकारी पक्षी हैं और सर्दियों की शुरुआत के साथ ही अपनी यात्रा शुरू कर देते हैं, जो सभी पक्षी प्रजातियों में सबसे लंबी यात्रा है।
- उनका नाम अमूर नदी के नाम पर रखा गया है जो रूस और चीन के बीच की सीमा बनाती है।
- वे दक्षिण-पूर्वी साइबेरिया और उत्तरी चीन में प्रजनन करते हैं, और मंगोलिया तथा साइबेरिया लौटने से पहले भारत एवं फिर हिंद महासागर से होते हुए दक्षिणी अफ्रीका में प्रवास करते हैं।
- नागालैंड में दोगांग झील अमूर फाल्कन के लिए उनके प्रजनन स्थलों से गर्म दक्षिण अफ्रीका की ओर वार्षिक प्रवास के दौरान एक पड़ाव के रूप में प्रसिद्ध है। इस प्रकार, नागालैंड को "विश्व की बाज़ राजधानी" के रूप में भी जाना जाता है।



- **संरक्षण की स्थिति:**
 - **IUCN:** सबसे कम चिंतित
 - **भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** संरक्षित
 - **प्रवासी प्रजातियों पर कन्वेंशन (CMS):** संरक्षित

Source: TH

अभ्यास AIKYA

समाचार में

- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और भारतीय सेना की दक्षिणी कमान चेत्रई में अभ्यास AIKYA की मेजबानी करने के लिए तैयार हैं।

अभ्यास AIKYA के बारे में

- **उद्देश्य:** सहयोग को बढ़ावा देना, तैयारियों को बढ़ाना और पूरे भारत में आपदा प्रबंधन में शामिल विभिन्न हितधारकों को एकीकृत करना।
- **भागीदारी:** छह दक्षिणी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों (तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और पुडुचेरी) के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- **शामिल प्रमुख एजेंसियाँ:** NDMA, भारतीय सेना, नौसेना, वायु सेना, NDRF, IMD, INCOIS और IIT मद्रास और NIOT सहित विभिन्न शोध संस्थान।
- **आपदा परिदृश्य:** अभ्यास में प्रतिक्रिया रणनीतियों का परीक्षण करने और एजेंसियों के बीच समन्वय में सुधार करने के लिए सुनामी, भूस्खलन, बाढ़, चक्रवात, औद्योगिक घटनाओं तथा जंगल की आग जैसी आपातकालीन स्थितियों का अनुकरण किया गया।

Source: PIB

